मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता है।

12 July

II Day 15/12/20

(1)

प्रकृति (Nature)

समाजशास्त्र की प्रकृति को समझने के लिए जो मतभेदपूर्ण प्रश्न रहा है कि समाजशास्त्र 'विज्ञान' है या नहीं? कुछ समाजशास्त्री जैसे- आगस्त कॉम्ट, दुर्खीम, मैक्स वेबर तथा पेरेटो आदि विद्वानों ने आरंभ से ही समाजशास्त्र को विज्ञान के रूप प्रतिष्ठित करने का प्रकृति के संबंध में विवाद पाया गया है वास्तव में विज्ञान मानना एक प्रतिष्ठा का सूचक है इसे स्पष्ट करने के लिए यह आवश्यक है कि विज्ञान शब्द को समझ लिया जाए। विज्ञान अपने आप में विज्ञान नहीं है बल्कि वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा प्राप्त किया गया व्यवस्थित ज्ञान ही विज्ञान है यदि किसी भी विषय का वैज्ञानिक के द्वारा तथ्यों का संकलन (collection) तथा तथ्यों के

Scanned with CamScan

के आधार पर सिद्धांत बनाए जाते है।

Stuward change (स्टूवर्ड चेन्ज) के अनुसार विज्ञान का संबंध पद्धति से है न कि विषय समाग्री से"।

Lundbarg के अनुसार "विस्तृत अर्थ में वैज्ञानिक पद्धति, तथ्यों का व्यवस्थित निरिक्षण तथा वर्गीकरण एवं विश्लेषण है"।

Imp

विज्ञान की प्रमुख विशेषता :—

1. वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग :— इसमें तथ्यों का संकलन, अवलोकन अनुसुची, प्रश्नावली, सर्वेक्षण व्यक्तिगत जीवन पद्धति, सांख्यिकी साक्षातकार किया जाता है।

2. निरीक्षण द्वारा तथ्यों का संग्रहण :— निरीक्षण द्वारा घटनाओं तथा तथ्यों का पर्याप्त चिंतन करना अर्थात जिस रूप मे घटित हो रहा है। उसी रूप में दर्शाना। उदा - जैसे - परिवार के अध्ययन में यह नहीं कहा जा सकता है कि कौन सा परिवार अच्छा है या बुरा बल्कि तथ्य के आधार पर ठीक उसी रूप में बताया जाता है जिस रूप में वे है।

3. तथ्यों का विश्लेषण तथा वर्गीकरण :— समाज शास्त्र में घटनाओं तथ्यों और विभिन्न समस्याओं का विश्लेषण तथा वर्गीकरण के बाद समान्य निष्कर्ष निकाला जाता है।

Scanned with CamScan

PAGE NO.: 50
DATE: / /

4. कार्य, कारण संबंधों की स्थापना एवं व्याख्या :—
कार्यकारण संबंधों की स्थापना एवं व्याख्या समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति की एक विशेषता यह है कि इसमें कार्यकारण संबंधों की स्थापना एवं व्याख्या होती है। समाजशास्त्री केवल एक घटना से संबंधों से संबंधित निरीक्षण तथा विवेचन का वर्गीकरण करके ही अलग से नहीं बैठता है बल्कि उस घटना से संबंधित तथ्यों का कार्यकारण संबंधो की स्थापना में प्रयत्नशील रहता है। उदा :— भारत वर्ष में अशिक्षा है तो उसका एक विशेष कारण होगा इस प्रकार अनेक समस्याओं के कारण खोजना एक समाजशास्त्री का कर्त्तव्य है।

5. सिद्धांत की पूर्ण परिक्षा में संभव :— वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा प्राप्त निष्कर्ष अथवा सिद्धांतों की यह प्रमुख विशेषता होती है कि उनके द्वारा सिद्धांतों की यह प्रमुख विशेषता होती है कि उनके द्वारा सिद्धांतों की पूर्णः परीक्षा संभव होती है आज का युग एक तार्किक युग है। कोई भी व्यक्ति कोई भी बात बिना तर्क के स्वीकार नहीं करता है इस प्रकार समाजशास्त्र के लिए भी यह आवश्यक नहीं है कि वह बिना तर्क व संकोच के नियमों और सिद्धांतों को ग्रहण कर ले। वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा आज समाजशास्त्री नियमों की परीक्षा एवं पूर्ण-परिक्षा संभव है जिस प्रकार हाइड्रोजन और आक्सीजन के संयोग से जल बनाने की पूर्णपरीक्षा किया जा सकता है ठीक उसी प्रकार टूटे-परिवार, गलत संगति एवं बाल अपराध के लिए उत्तरदायी है। इस सिद्धांत को अलग-अलग स्थानों पर पुर्णपरीक्षा किया जा सकता है।

PAGE NO.: 6.
DATE: / /

6. सिद्धांतो की सर्वभौमिकता :— समाजशास्त्र मे जो भी सिद्धांत प्रतिपादित किये जाते है वे सार्वभौमिक प्रकृति के होते है सार्वभौमिक का अर्थ यह है कि हर जगह एक जैसा लागू होना। वास्तव मे परिस्थितियो समान हो समाज तथा घटित मे परिवर्तन न हो तो समाजशास्त्री सिद्धातो मे सार्वभौमिकता पायी जाती है। जैसे - पारिवारिक विघटन सामाजिक विघटन पर आधारित है। इसकी सत्यता का पता लगाया जा सकता है।

7. भविष्यवाणी करने की क्षमता :— भविष्यवाणी करने की क्षमता समाजशास्त्र मे क्या है और किस-2 आधार पर होने वाली घटना को बताने की क्षमता है। के वर्तमान समय मे समाज मे आज के समाज मे बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है परिवर्तन की उस गति से समाजशास्त्र बता सकता है कि आने वाले समय मे समाज परिवार मे किस प्रकार का परिवर्तन अर्थात कुछ सीमा तक भविष्यवाणी करने मे समाजशास्त्र सक्षम है।

July